

मुनि साथ चले मिथिला सुनु जननी प्यारी ।
 सति संग के रस रंग में हींय हर्ष अपारी ॥
 मार्ग की भूमि कोमल सुन्दर सुहावनी
 दोनों ओर वृक्ष पंगति थी मन भावनी
 ठौर ठौर में थी फूली फूलों की क्यारी ॥
 रंगी रंगी फूल लखि लखि लक्ष्मण उमंग फूले
 कर पुष्प प्रेम सों तन मन की सुरति भूले
 करके श्रंगार मेरा भरे मोद में भारी ॥

इस रीति चलते चलते कमला तीर आए
 जहां हरी हरी दूब थे कालीन विछाए
 जल मांहि झुक रही थी फूली हुई डारी ॥
 कमला में कमल खिल खिल शोभा बढ़ा रहे
 स्वागत के गीत भौरै गुंजन में गा रहे
 जल लहरियों से रह रह हिली कमल की झारी ॥
 करते थे खेल जल में मिलि हंस बतक सारस
 देती थी सरिता तिनको मछुली का परस पारस
 देखि मीन खाते तिनको आई यदि तुम्हारी ॥
 कैसे सुन्दर ताम बनाइ मैया सुमित्रा लातीं
 निज गोद में बिठाकर तुम प्रेम से खिलातीं
 तेरे लाड़ की सुरति करि बहा नैनो से बारी ॥

विहवल अधरनि को लखा लखन लाल मेरे
करुणा में भरि भोजन को घूमें चारों ओर
ले आए कुछ पकाकर सौमित्र धनुर्धारी ॥

रमा पति को भोग लगाकर दोनों विपति संगी भाई
किया मिल के प्रेम भोजन आनंद सो अघाई
भए वात्सल्य में भैया से लक्ष्मण महितारी ॥

तेहि समय मिथिला पुर से आई समीर सुहाई
जीवन सखा मुख कमल की तामें सुगंधि समाई
शुभ सलिल कण सों भीगे जैसे बसंत बहारी ॥

मधु मिश्री दूध से भी वह थी मधुर मारुति लहरी
अमृत अमर पद ओ बृहन्नंद से भी गहिरी
चन्दन केसरि इतर से थी सुगंधि सोभारी ॥

राज मराल मंद गति सों जब अंगनि मेरे परिसी
कोटि केहरों की शक्ति तब हृदय मांह सरसी
सौभाग्य रंग भरी थी प्रेम लालसा वारी ॥

मृग शिशु ज्यों ठम ठम करते वह वायू थी बहती
प्राण जीवन मिलन का थी शुभ संदेश कहती
गंगा नीर से ठंढिड़ी वर्षा रोम रोम पसारी ॥

सुरभित समीर वह थी मानो प्रेम की डोरी
मुझे खींच लाई जल्दी मिथिला पुर ओरी
भए प्रसन्न दोउ दूर से मिथिला पुरी निहारी ॥

चारों ओर थे नगर के फूले फूले चमन सुन्दर
बीच बीच में सरोवर और देवों के थे मन्दिर
सब जीव वहां बोलें जै जै जनक कुमारी ॥

भया दरस होनें खेम करी का शुभ सगुन होन लागे
अंग फड़क उठे मेरे मनु प्रसन्नता में पागे
नस नस में नेह छाया चढ़ी नैन खुमारी ॥

भई गगन से मधुर धुनि आनंद बधाई
तब नभ की ओर निहारा विस्मति हो दोनों भाई
देखे कृपा रस में भीने प्रिया सहित पुरारी ॥

किया वन्दनु जगत गुर को श्रद्धा सों सिर झुकाकर
चले आगे मधुर चाल सों चित चौज़ बढ़ाकर
देखा चन्दन कोट जांफे देव मूरति सींगारी ॥

भरिपूर थे सब हर्ष में पुरि जीव चराचर
विभोर थे रस प्रेम में पशु पक्षी नारि नर
सब नैननि में झलक रही प्रेम किरण उज्यारी ॥

मेघ राग दुदुंभी सुनि सुनि पैठे द्वार के भीतर
देव मन्दरों में बज उठे घंटा नाद तेहि अवसर
रिगि साम वेद मंत्र रिचा मिलि विप्र उचारी ॥

काल क्रम में बंधन से सब पार मिथिला वासी
सब सुखी वैष्णव तेज सों हैं रूप गुणनि राशी
श्री विदेह जीवन विदेह हो गावे कीरति मुरारी ॥

सहस्र झुंड नगर बनिता सोलह श्रंगार धारे
जै जै कुंवरि किशोरी कल कण्ठ सों उचारे
मंगल आशीश देते सब विदेह दुलारी ॥

गलियों में अबीर कुम कुम की मच रही
चारों ओर सुखद सौरभ सरिता सी हो बही
बढ़े आगे दोऊ उमंग सों लखि शोभा सुखारी ॥

मणि सीढ़ियों से देखा इक सुन्दर सरोवर
नीम वृक्षों से घिरा हुआ लगता था मनोहर
जल लहरियों ने मुनि की मानों सेवा संवारी ॥

तब गरीबि श्री खण्डि कोकिलि आलाप बोले
इस कुंज में बिराजो प्रिय पाहुने टोले
मृग चर्म बिछाय बैठे तंह मुनि जटाधारी ॥